AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Date)

801

आरती श्री गणेश जी की

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ।।जय०।।
एकदन्त दयावन्त, चार भुजा धारी। मस्तक सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ।।जय०।।
पान चढ़ें, फूल चढ़ें और चढ़ें मेवा। लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा ।।जय०।।
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ।।जय०।।
सूरश्याम शरण आये सुफल कीजे सेवा। दीनन की लाजराखो शम्भु-सुत वारी ।।जय०।।
कामना को पूरा करो जग बलिहारी। जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा ।।जय०।।

802

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Aarti)

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Date)

803

श्री लक्ष्मी वन्दना

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि ।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ।।
नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयंकरि ।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयंकरि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भक्तिमुक्तिप्रदायिनि ।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु विधाता ॥ ओ३म्॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता। सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ओ३म्॥
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति-दाता। जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ॥ ओ३म्॥
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही सुख दाता। कर्म-प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ॥ ओ३म्॥
जिस घर में तुम रहतीं, तहँ सब सद्गुण आता। सब सम्पन्न हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ ओ३म्॥
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता। खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ ओ३म्॥
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ॥ ओ३म्॥
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ ओ३म्॥
जहाँ तक चरण तेरे पहुँचे, वह शुभ हो जाता। मैं सेवक सेवा की शुभ दृष्टि चाहता ॥ ओ३म्॥

804

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Aarti)

श्री लक्ष्मी वन्दना

नमस्तेस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयंकरि ।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयंकरि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भक्तिमुक्तिप्रदायिनि ।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु विधाता ॥ ओ३म्॥
उमा, रमा, ब्रह्मणी, तुम ही जग-माता। सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ओ३म्॥
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति-दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ॥ ओ३म्॥
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभ दाता। कर्म-प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ॥ ओ३म्॥
जिस घर में तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता। सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ ओ३म्॥
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता। खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ ओ३म्॥
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ॥ ओ३म्॥
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ ओ३म्॥
धनी तक बरस तेरे पूँचे, मन शुभ हो जाता। मैं सेवक मैया की शुभ दृष्टि चाहता ॥ ओ३म्॥

805

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Aarti)

806

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Date)

आरती श्री अम्बा जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।
माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को ।
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे ।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती ।
धूम्र - विलोचन - नैना निशिदिन मदमाती ।
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी ।
चौसठ योगिनि मंगल गावत, नृत्य करत भैरों ।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भुजा चार अति शोभित, वर - मुद्रा धारी ।
कंठन वाल विराजत, उत्तर कपूर बाती ।
माँ अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावै ।

तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ।
कुण्डल को चोट मैया, चक्र गदा तीनों ।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति ।
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती ।
लक्ष्मी रत्न चौदह भारे, सुर-नर-मुनि करे ।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ।
बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरू ।
भक्तन की दुख हरता, सुख-सम्पति करता ।
भक्तांकित फल पावत, दोनत नर-नारी ।
श्री मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति ।
कनक विशालन्त स्वामी, सुख सम्पति पावै ।

जय अम्बे ।।
जय अम्बे ।।
जय अम्बे ।।
जय अम्बे ।।
जय अम्बे ।।
जय अम्बे ।।
जय अम्बे ।।
जय अम्बे ।।
जय अम्बे ।।
जय अम्बे ।।
जय अम्बे ।।
जय अम्बे ।।
जय अम्बे ।।
जय अम्बे ।।
जय अम्बे ।।
जय अम्बे ।।

807

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Aarti)

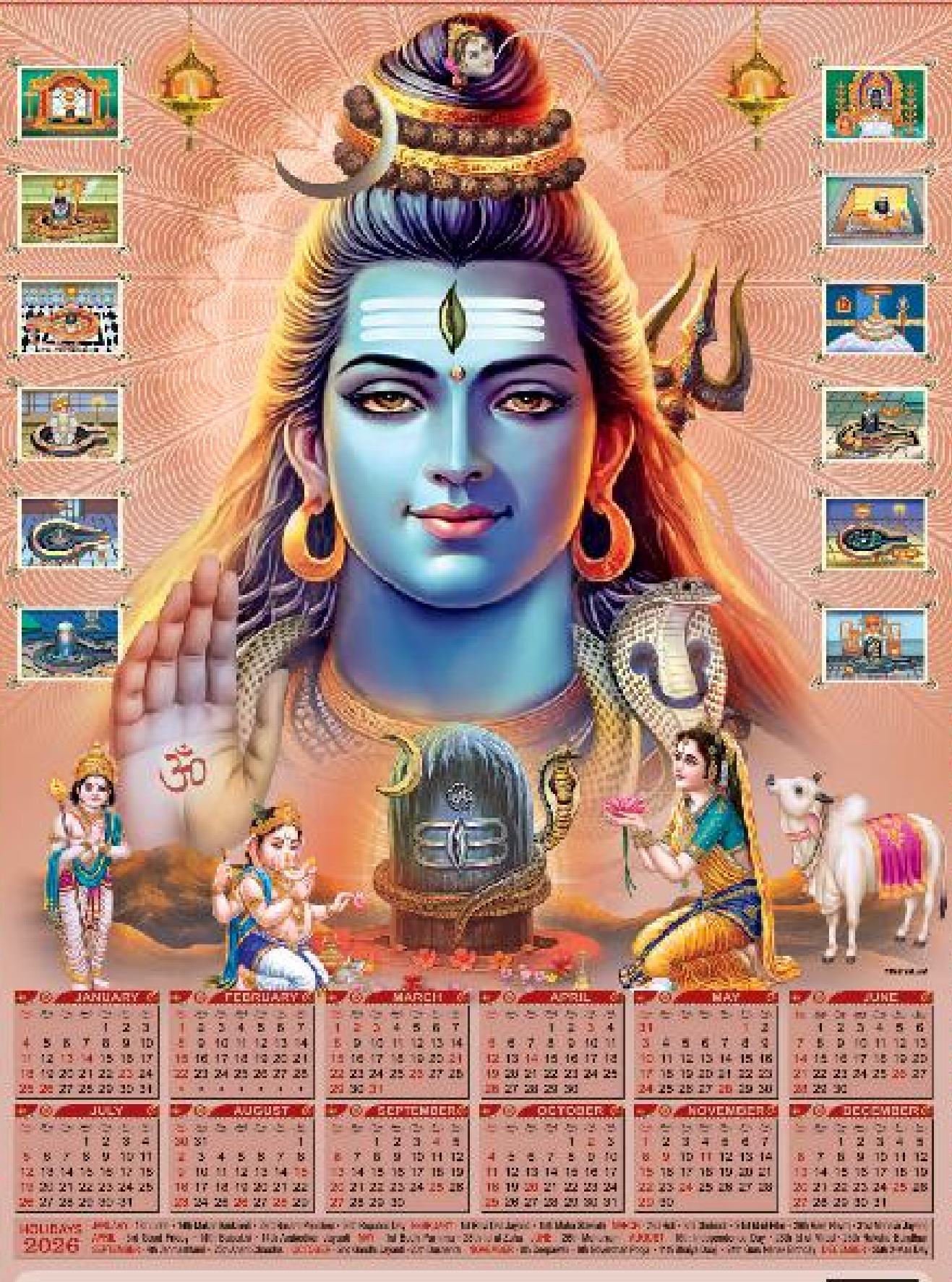

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Date)

808

महामृत्युञ्जय मंत्र

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

अर्थात् : हम भगवान शंकर की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का पालन पोषण अपनी शक्ति से कर रहे हैं। उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जाए, जिस प्रकार एक ककड़ी बेल में पक जाने के बाद उस बेल रूपी संसार के बन्धन से मुक्त हो जाती है उसी प्रकार हम भी इस संसार रूपी बेल में पक जाने के बाद जन्म-मृत्यु के बन्धनों से सदैव के लिए मुक्त हो जाएँ और आपके चरणों की अमृतधारा का पान करते हुए शरीर को त्याग कर आप में लीन हो जाएँ।

लाभ : ◆ यह मंत्र जीवन प्रदान करता है। (अकाल मृत्यु, दुर्घटना इत्यादि) ◆ यह मंत्र शिव एवं विष्णु के कहने पर भी अपना पूर्ण प्रभाव रखता है। ◆ इस मंत्र का महत्वपूर्ण लाभ है कठिन एवं असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त करना। ◆ यह मंत्र हर बीमारी को भगाने का बड़ा अस्त्र है।

809

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Mahamritunjaye Mantra)

महामृत्युञ्जय मंत्र

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

भावार्थ : हम भगवान शंकर की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का पालन पोषण अपनी शक्ति से कर रहे हैं। उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जाए, जिस प्रकार एक ककड़ी बेल में पक जाने के बाद उस बेल रूपी संसार के बन्धन से मुक्त हो जाती है उसी प्रकार हम भी इस संसार रूपी बेल में पक जाने के बाद जन्म-मृत्यु के बन्धनों से सदैव के लिए मुक्त हो जाएँ और आपके चरणों की अमृतधारा का पान करते हुए शरीर को त्याग कर आप में लीन हो जाएँ।

फल लाभ : ◆ यह मंत्र जीवन प्रदान करता है। (अकाल मृत्यु, दुर्घटना इत्यादि) ◆ यह मंत्र शिव एवं विष्णु के कहने पर भी अपना पूरा प्रभाव रखता है। ◆ इस मंत्र का महत्वपूर्ण लाभ है कठिन एवं असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त करना। ◆ यह मंत्र बीमारी को भगाने का बड़ा अस्त्र है।

AVAILABLE IN :

810

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Mahamritunjaye Mantra)

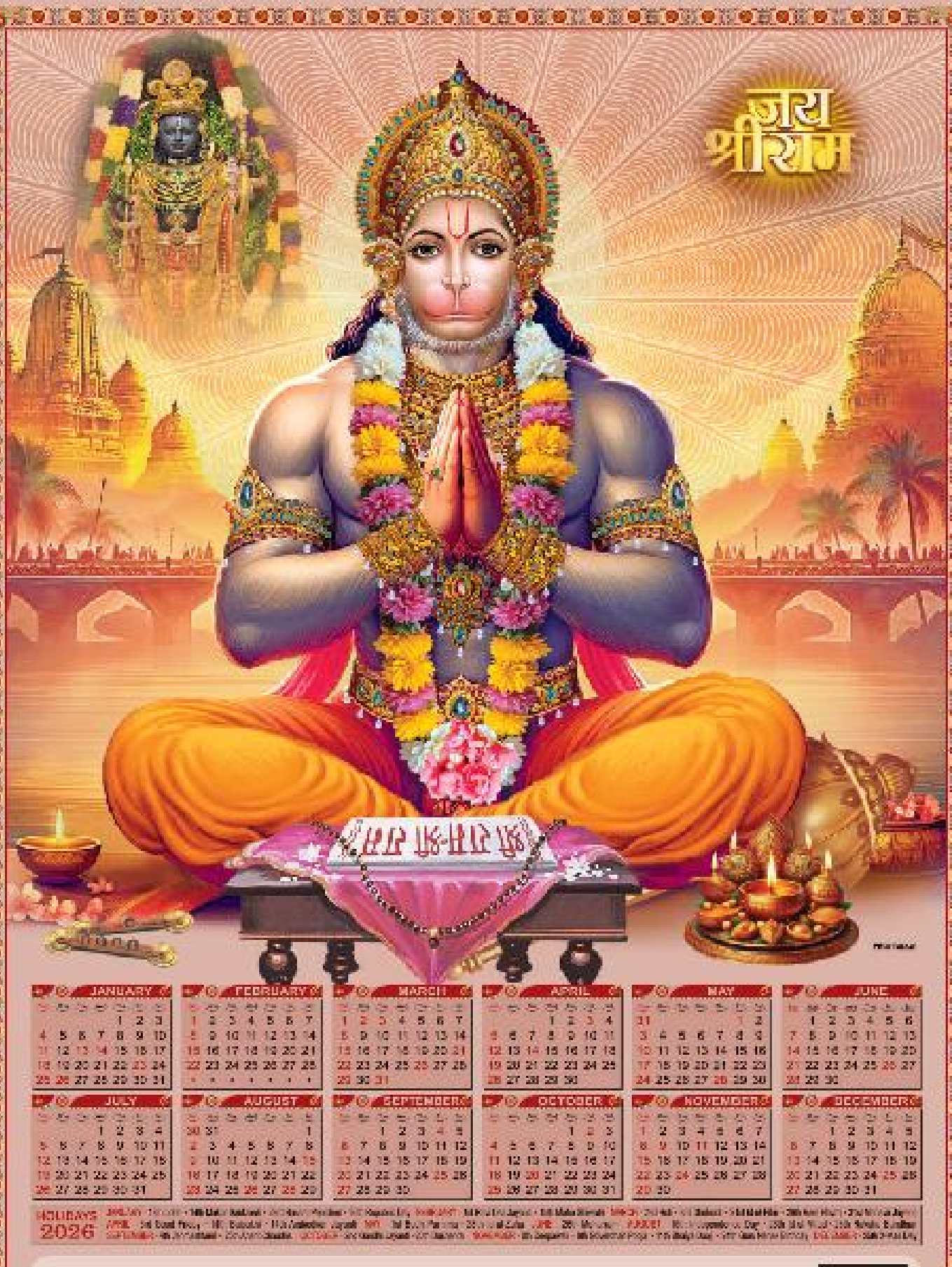

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)

(Date)

811

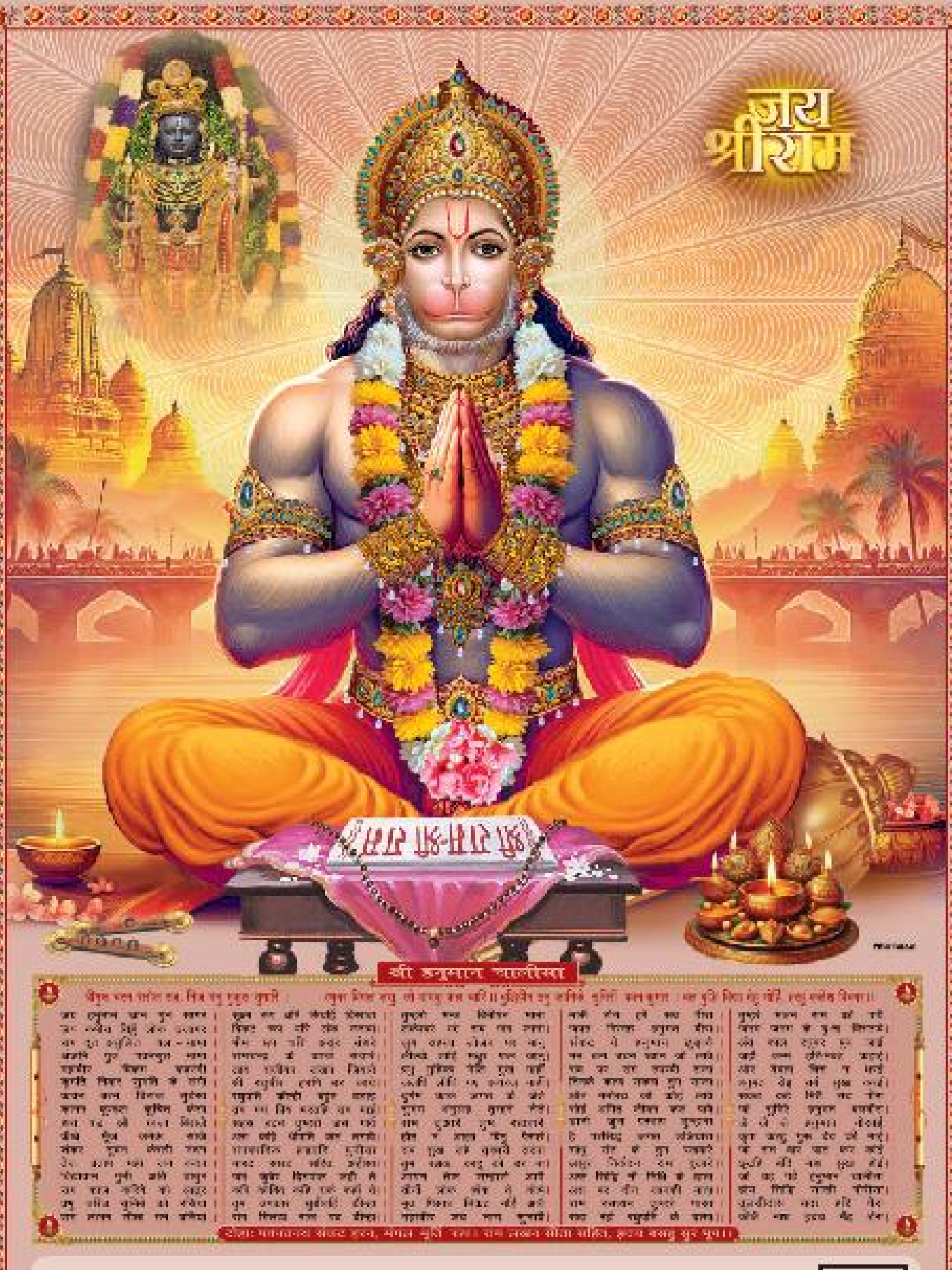

AVAILABLE IN :

812

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Hanuman Challsa)

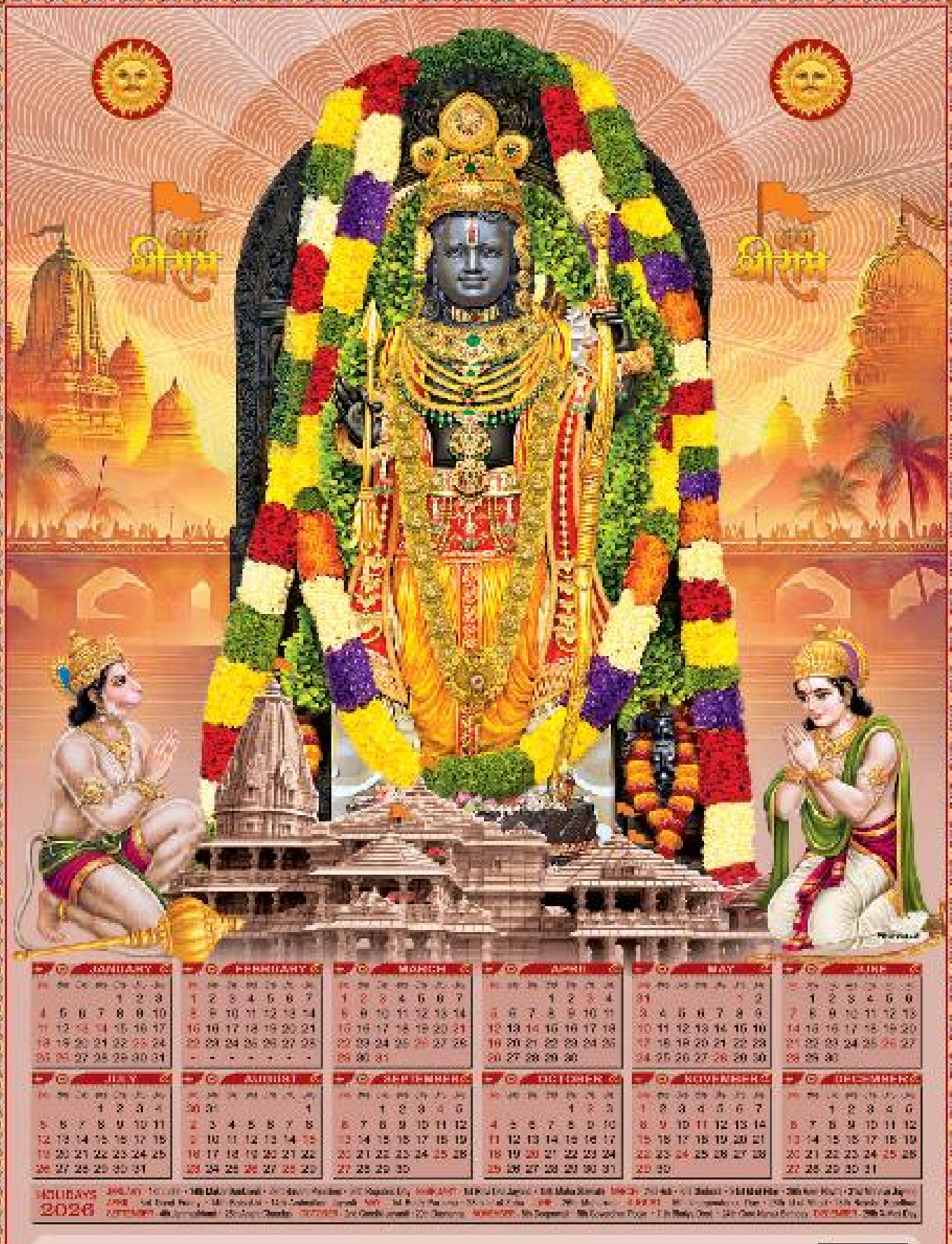

AVAILABLE IN :

813

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Date)

आरती श्री राम लला की

आरती कीजे श्रीराम लला की। पूरन निपुण धनुर्वेद कला की।। धनुष बान कर सोहत नीके। शोभा कोटि मदन मद फीके।।
सुभग सिंहासन आप विराजे। राम भाग वैदेही साजे।। कर जोरे रिपुहन हनुमाना। भरत लखन सेवत विधि नाना।।
शिव अज नारद गुन गान गावै। निगम नेति कह पार न पावै।। नाम प्रभाव सकल जग जानै। शेष महेश गणेश बखानै।।
भगत कामतरु पूरणकामा। दया अमा करुना गुन धामा।। सुग्रीवहुं को कपिपति कीन्हा। राज विभीषन को प्रभु दीन्हा।।
खेल खेल महु सिंधु बधाये। लोक सकल अनुपम यश छाये।। दुर्गम गढ लंका पति मारे। सुर नर मुनि सबके भय टारे।।
देवन थापि सुजस विस्तारे। कोटिक दीन मलीन उधारे।। कपि कंकट खग निसचर कीने। करि करुना दुःख दोष निवारे।।
देत सदा दासन्ह को माना। जगत पूज्य मे कपि हनुमाना।। आरति दीन सदा सत्कारे। त्रिहुपुर होत राम जयकारे।।
कौसल्यादि सकल महतारी। दशरथ आदि भगत प्रभु भारी।। सुर नर मुनि प्रभु गुन गन गाई। आरति करत बहुत सुख पाई।।
धूप दीप चन्दन नैवेद्य। मन दृढ करि नहि कबहुन भेद्य।। राम लला की आरती गावै। राम कृपा अमित फल पावै।।

AVAILABLE IN :

814

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Aarti)

815

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Date)

आरती श्री रामचन्द्र जी की

श्रीरामचन्द्र रघुपुङ्गव राजवर्य राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश। राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्र दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोऽस्मि।।

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणम्। नवकंज लोचन, कंज-मुख कर-कंज पद-कंजारुणम् ॥१॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरद-सुन्दरम्। पटपीत मानहु तड़ित रुचि सुचि नौमि जनक सुता-वरम् ॥२॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव - देत्यवंश - निकन्दनम्। रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद्र दशरथ - नन्दनम् ॥३॥
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम्। आजानु भुजा शर-चाप-धर संग्राम - जित - खर - दूषणम् ॥४॥
इति वदति तुलसीदास शंकर - शेष - मुनि - मन - रंजनम्। मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खल दल गंजनम् ॥५॥
मन जाहि राच्यो मिलहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो। करुणा निधान सुजान शील स्नेह जानत रावरो ॥६॥
एहि भांति असीस सुनी सिय सहित हिय हरषित अली। तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥७॥

सोरठा- जानि गौरी अनुकूल सिय हिय हरषु न जाई कहि। मंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे।।

816

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Aarti)

आरती श्री रामचन्द्र जी की

श्रीरामचन्द्र रघुपुङ्गव राजराजे राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश। राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्र दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोऽस्मि॥

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणम्। नवकंज लोचन, कंज-मुख कर-कंज पद-कंजारुणम् ॥१॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरद-सुन्दरम्। पटपीत मानहु तड़ित रुचि सुचि नौमि जनक सुता-वरम् ॥२॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव - दैत्यवंश - निकन्दनम्। रघुनंद आनंदकंद कौशलचन्द्र दशरथ - नन्दनम् ॥३॥
शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम्। आजानु भुजा शर-चाप-धर संग्राम-जित-खर-दूषणम् ॥४॥
इति वदति तुलसीदास शंकर - शेष - मुनि - मन - रंजनम्। मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि-खल-दल-गंजनम् ॥५॥
मन जाहिं राच्यो मिलहिं सो वर सहज सुन्दर सांवरो। करुणा निधान सुजान शील स्नेह जानत रावरो ॥६॥
एहि भांति अगौरि असीस सुनी सिय सहित हिय हरषित अली। तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥७॥

दोहा- जानि गौरी अनुकूल सिय हिय हरषु न जाई कहि। मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥

817

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Aarti)

818

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Date)

आरती जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥ ॐ ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का ॥ प्रभु ॥ सुख–सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ ॐ ॥
माता–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी ॥ प्रभु ॥ तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ॐ ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ प्रभु ॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥ प्रभु ॥ मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥ प्रभु ॥ किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ ॐ ॥
दीन बन्धु दुःख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे ॥ प्रभु ॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्रभु ॥ श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ॐ ॥
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥ प्रभु ॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ॐ ॥

819

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Aarti)

आरती जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥ ॐ ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का ॥ प्रभु ॥ सुख–सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ ॐ ॥
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी ॥ प्रभु ॥ तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ॐ ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ प्रभु ॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥ प्रभु ॥ मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥ प्रभु ॥ किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ ॐ ॥
दीन बन्धु दुःख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे ॥ प्रभु ॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्रभु ॥ श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ॐ ॥
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥ प्रभु ॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ॐ ॥

820

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Aarti)

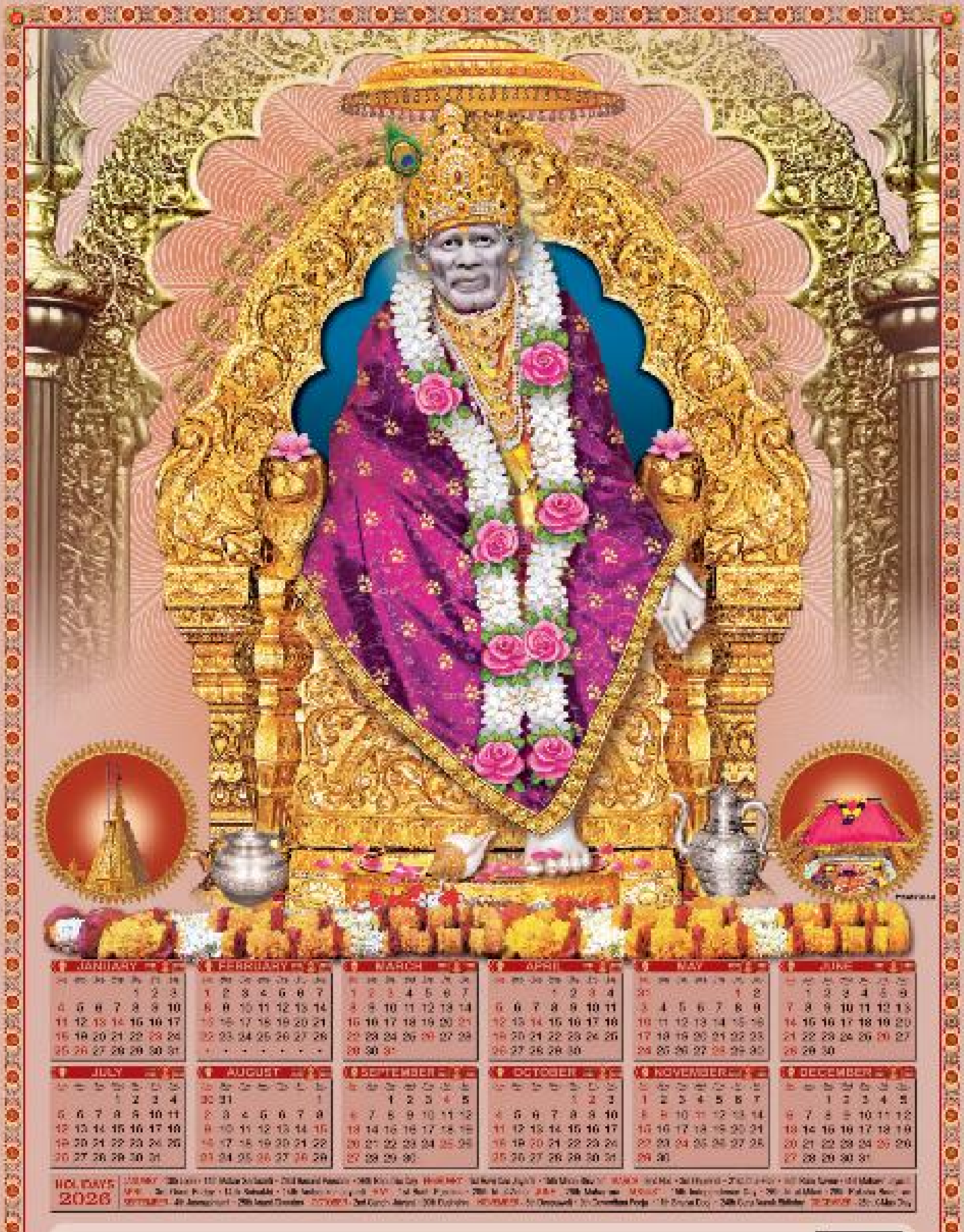

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Date)

821

822

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Date)

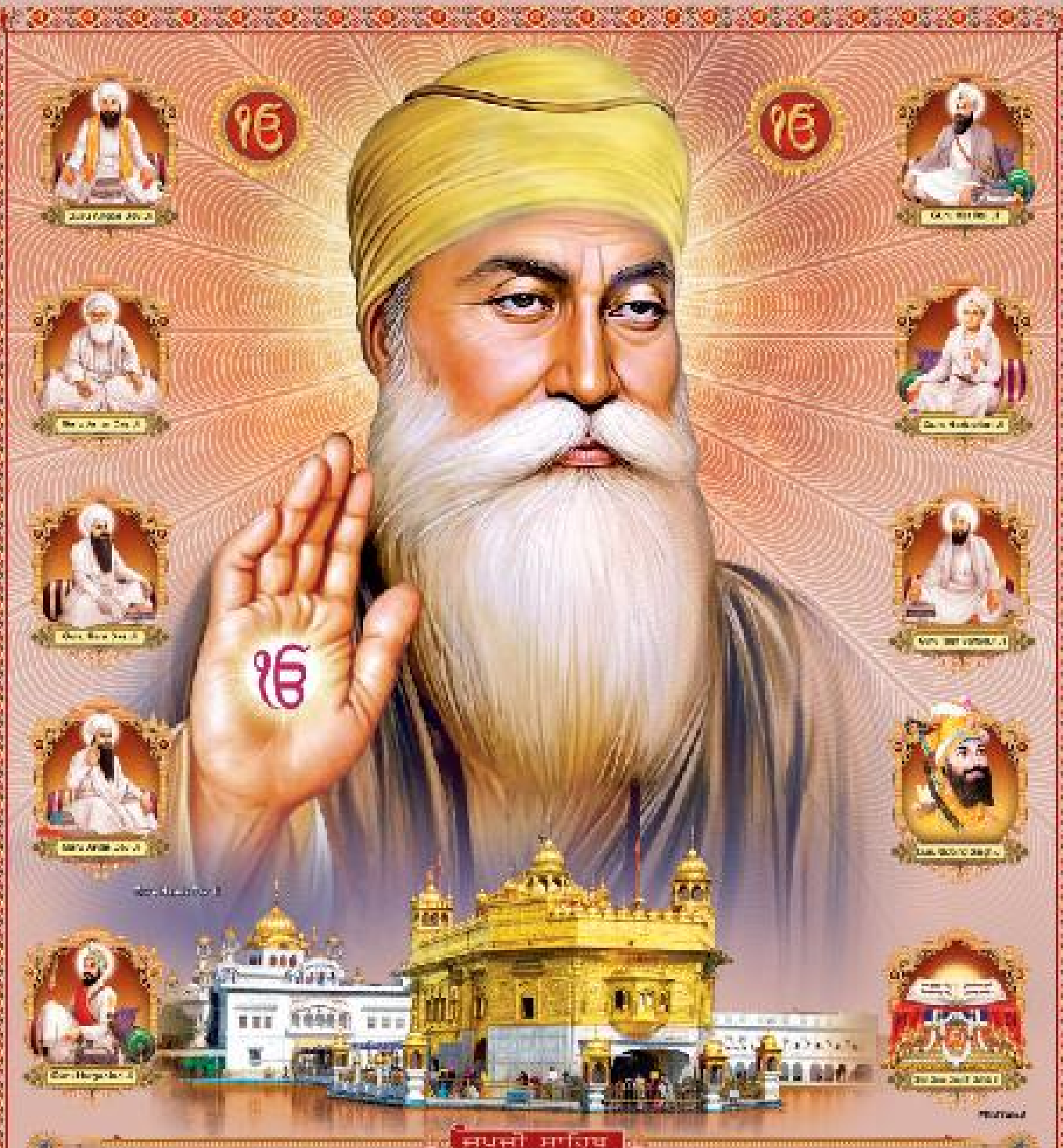

ਸਪਸੀ ਸਾਰਤਿ

823

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Japuji)

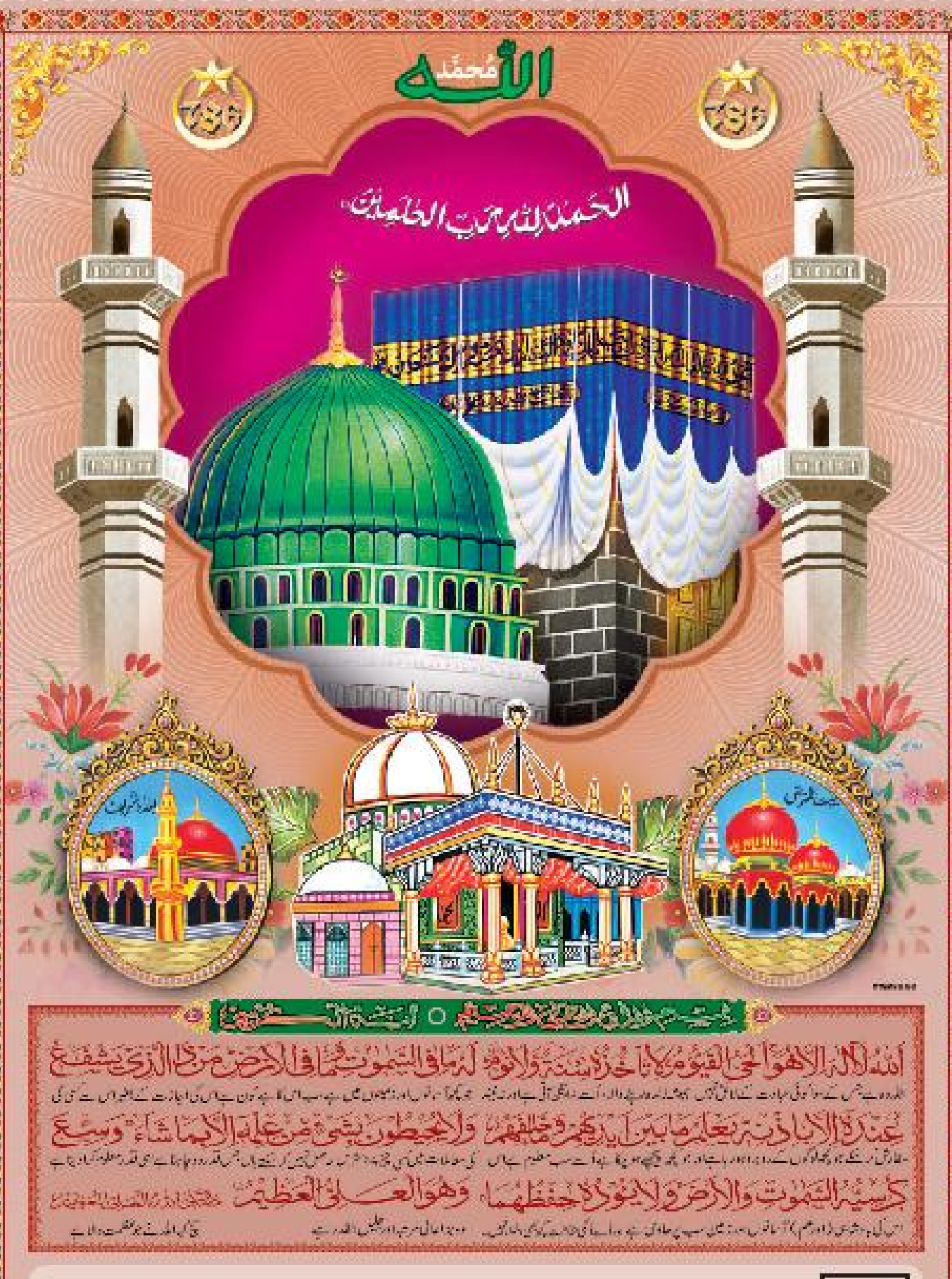

AVAILABLE IN :

20" x 30" (Rainbow Rose Gold Crystal)
(Muslim)

824